शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अप्रैल 2014

भाषा और साहित्य का अन्त:संबंध

मिलिंद कुमार गौतम (शोधार्थी)
भाषा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भाषा और साहित्य का संबंध अन्योन्याश्रित है। भाषा के अभाव में साहित्य का अस्तित्व संभव नही है। भाषा और साहित्य का पारस्परिक संबंध जानने के लिए भाषा और साहित्य की परिभाषा एवं विवेचन पर विचार करना आवश्यक है । भाषा और साहित्य पर अलग-अलग विचार करने के बाद इनमें पारस्परिक संबंध स्थापित किया जा सकता है।

प्रस्तावना

भाषा के बारे में कुछ भी कहना, अपनी छाया को पकड़ना है। यह कहना ठीक होगा कि हम उसकी छाया हैं अपना यथार्थ उसमें गढ़ते हैं अपने को उसमें और उसके द्वारा अपने आपको परिभाषित करते हैं।1 भाष् धातु से व्युत्पन्न भाषा शब्द का सामान्य अर्थ है कहना या बोलना। भाषा जितनी शब्द व्यापी होती है उतनी ही रूप और भाव व्यापी भी। सृजन में वह कभी संगीत लगती है, कभी चित्रकला, कभी कोलाज, कभी पैराडी तो कभी शून्य। वह ध्वनि भी है, अक्षर भी, शब्द भी, वाणी भी। सृजन लिखित हो या वाचिक वह भाषा में ही सम्भव है। जन्म के बाद सर्वप्रथम हमारे पास क्या आता है ? सम्भवत: जन्म के बाद और जन्म के पूर्व सर्वप्रथम जो चीज आती है वह है भाषा 2 आकृतियों का एक समग्र संसार तो जन्म के साथ ही हमारे आस-पास उग आता है। कुछ भी निराकार नहीं, सभी साकार। कुछ भी निर्गुण नहीं, सभी सगुण सोद्देश्य और सार्थक है। इसलिए आँखों में जो अंकित होता है, वह आकार है कानों में जो बजता है वह ध्वनि है, और त्वचा पर जो स्पन्दन करता है, वह कोई राग या भाव है इन सबसे परिचित करने की शक्ति भाषा में ही है। भाषा बड़ा ही व्यापक एवं महत्वपूर्ण शब्द है। मानव जीवन में भाषा का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा हमारे जीवन के साथ इस प्रकार घुल-मिल गई है कि एक क्षण के लिए भी हम उसे अपने से अलग नहीं कर सकते। अवसर विशेष पर भाषा के महत्व का अनुभव लगता है। अबोध बच्चे को किसी वस्तु के लिए छटपटाते देख अथवा किसी गूंगे को हाथ के संकेत से अपने भावों की अभिव्यक्ति में कठिनाई को देखकर हमें भाषा की उपयोगिता का सहज ज्ञान हो जाता है। भाषा ही हमारी सभ्यता का आधार है। मनुष्य एवं अन्य जीवों में मुख भेद भाषा का ही है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक क्रियाकलापों के लिए हमारे पास भाषा ही एक मात्र साधन है। मनुष्य एक विवेक शील प्राणी है। विवेक ही मनुष्य को पशु अलग करता है। इस विचार विनिमय का साधन भाषा ही है। भाषा

एक सामाजिक वस्तु है भाषा देश की राष्ट्रीय चेतना का प्रधान साधन है। भाषा राष्ट्र निर्माण के कार्य में सहायक सिद्ध होती है। जिस राष्ट्र की भाषा जितनी उन्नत एवं समृद्ध होगी, वह राष्ट्र उतना ही श्रेष्ठ समझा जायेगा। प्रत्येक मनुष्य अपने व्यवहार के लिए कम अथवा अधिक भाषा का सहारा लेता है। भाषा के बिना किसी भी व्यक्ति को नित्य प्रति के कार्य संचालन में बड़ी कठिनाई होती है। भाषा के महत्व पर विचार करते हुए श्री साठे ने लिखा है - ''मनुष्य के निजी जीवन में खुराक, पानी तथा हवा का जो स्थान है वही स्थान मनुष्य के सामाजिक जीवन में भाषा का है।3

भाषा

आत्म उत्खनन अथवा आत्म - अन्वेषण का सबसे सक्षम आयुध भाषा है। भाषा मनुष्य की देह का अदृश्य अंग है जो उसे आत्म दृष्टि देता है भाषा और आत्म बोध का यह सम्बन्ध मनुष्य को समस्त जीव-जन्तुओं से अलग एक अद्वितीय श्रेणी में ला खड़ा कर देता है। विद्वानों ने भाषा की परिभाषा इस प्रकार दी है - ''भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली-भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार स्पष्टता से समझ सकता है। (कामता प्रसाद गुरु) जगत का अधिकांश व्यवहार बोलचाल अथवा लिखा-पढ़ी से चलता है, इसलिए भाषा जगत के व्यवहार का मूल है। जिस ध्वनि समुच्चय द्वारा मनुष्य किसी वस्तु के संबंध में अपने भावों या विचारों को प्रकट करता है, उसे भाषा कहते है। ''उस सार्थक शब्द समूह को भाषा कहते हैं, जिसमें हम अपनी बात सही-सही दूसरों को समझा सकते है। स्वीट के अनुसार, “ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।“ भोलानाथ तिवारी के अनुसार, “जिस साधन से हम अपने विचार या भाव दूसरों तक पहुँचा सके वह भाषा है।“ आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा के अनुसार - ''उच्चारित ध्वनि संकेतों की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति भाषा है।

साहित्य

''सहितस्य भावः तत साहित्यम्'' के अनुसार साहित्य ज्ञान राशि का संचित कोष है। 'साहित्य' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है (स $ हित) अर्थात् जिस रचना में सभी का हित हो वही साहित्य है। 'साहित्य' शब्द ''सहित शब्दों से उत्पन्न है। अतएव धातुगत अर्थ करने पर साहित्य शब्द में मिलने का एक भाव दृष्टिकोण होता है। वह केवल भाव का भाव के साथ, भाषा का भाषा के साथ, ग्रन्थ का ग्रन्थ के साथ मिलन है। यही नहीं, वरन् यह बतलाता है कि मनुष्य के साथ मनुष्य का अतीत के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट का, अत्यन्त अंतरंग योग साधन साहित्य के अतिरिक्त और किसी के द्वारा संभव नही है। जिस देश में साहित्य का अभाव है उस देश के लोग सजीव बंधन से बंधे नही, विच्छिन्न है।

साहित्य शब्द की व्युत्पत्ति - उत्तम भाषा में व्यक्त किये हुए जन समाज के उत्तमोत्तम विचार संग्रहित होकर साहित्य का रूप धारण करते हैं। साहित्य शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के सहित शब्द से हुई है। सहित का अर्थ है विविध वस्तुओं का एकीकरण। कुछ व्यक्ति इसका अर्थ कल्याण सहित मानते हैं अतः साहित्य अर्थात् संग्रह के भाव को ही साहित्य कहते हैं। साहित्य का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। धर्म दर्शन, विज्ञान और काव्य (जिसमें गद्य, पद्य, नाटक, उपन्यास,

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अप्रैल 2014

आख्यापिका आदि है) राजनीति, अर्थशास्त्र आदि जितना वाड्मय है सब साहित्य के अन्तर्गत समाहित है। संकुचित दृष्टिकोण से साहित्य काव्य का पर्याय है। साहित्य मानव समाज के विचारों का आगार है और विचारों के द्वारा ही समाज का कार्य सम्भव है हमारे विचार भाषा का परिधान पहनकर समाज के सम्मुख आते हैं और सक्रिय हो उसकी गति को निश्चित करते हैं। इसके द्वारा मानव जीवन की अभिव्यक्ति और "सम्पूर्ण ज्ञान की चेतना का बोध होता है। मनुष्य अनन्त होता हुआ भी शान्त है, पूर्ण होता हुआ भी अपूर्ण है। पूर्णता और अपूर्णता की स्थिति एक साथ नहीं रह सकती। इस अपूर्णता से पूर्णता का बिन्दु से सिन्धु की साधना में, साहित्य एक स्थायी सम्पत्ति के रूप में मानव को प्राप्त हुई है। साहित्य जीवन के विकास का चरम सौपान है। साहित्य के द्वारा ही हम शेष सृष्टि के साथ रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करने में समर्थ होते हैं। साहित्य जिस प्रकार प्रेम, क्रोध, करूणा, घृणा आदि मनोवेगों या भावों पर ज्ञान चढ़ाकर उन्हें तीक्ष्ण कर देता है, उसी प्रकार जगत के नाना रूपों और व्यापारों के साथ हमारा उचित सम्बन्ध स्थापित करता है। साहित्य पाठक या के मन का संस्कार एवं परिष्कार कर उसकी रूचि को उदात्त बनाता है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना साहित्य के द्वारा ही आती है। "साहित्य चिरनवीन भी है और चिरन्तन भी। हम उसे प्राचीन और नवीन का तारतम्य निरूपित करने में एकमात्र समर्थ पाते है। जातियों के वास्तविक इतिहास को सुरक्षित रखने का साधन साहित्य के अतिरिक्त और क्या है ? राष्ट्रों के जीवन की उन्नति और अवनति, आशायें और आकांक्षायें साहित्य में ही चित्रित मिलती हैं। समष्टि रूप में साहित्य मानवता का दर्पण है। भिन्न-भिन्न जातियाँ उत्पन्न हुई और नष्ट हुई आज उनकी कृतियों का पता तक नहीं है, परन्तु साहित्य में वे अब भी अपना अस्तित्व बनाए हुए है। मनुष्य समाज वास्तव में साहित्य मानवता का दर्पण है। समस्त मतों की विवेचना के बाद साहित्य शब्द को परिभाषा के 'पाश' में बांधना दुष्कर है। यद्यपि भिन्न-भिन्न विद्वानों ने साहित्य की परिभाषा भिन्न-भिन्न प्रकार से की है किन्तु कोई भी परिभाषा पूर्ण नही की जा सकती। संस्कृत में निरूपित साहित्य की परिभाषाएँ

(1) कुन्तक – वक्रोक्ति जीवितकार कुन्तक ने साहित्य की व्याख्या इस प्रकार की है, "साहित्यमनयों शोभाशालिताम् प्रति काव्यसो, अन्यूनानतिरिक्तत्वम् मनोहारिण्यवस्थिति।" अर्थात् "साहित्य वह है जिसमें शब्द और अर्थ दोनों की परस्पर रूपधार्मय मनोहारिणी श्लाघनीय स्थिति हो।"

(2) भर्तृहरिः - जो व्यक्ति, संगीत, साहित्य तथा कला विहीन है वह पशु के समान है केवल उनमें पूंछ और सींग नही होते "साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात पशुः पुच्छ विषाणहीनः।

(3) राजशेखर - राजशेखर ने साहित्य शब्द का प्रयोग इस प्रकार किया है। "शब्दार्थ योर्ययावत्सह भावेन साहित्य विद्या" अर्थात् वह विद्या जहाँ शब्द और अर्थ का यथा योग्य सहयोग रहता है साहित्य विद्या है। हिन्दी विद्वानों द्वारा निरूपित साहित्य की परिभाषाएँ - (1) महावीर प्रसाद द्विवेदी - ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम ही साहित्य है।

(2) मुंशी प्रेमचंद - "साहित्य की बहुत सी परिभाषाएँ दी गई है पर मेरे विचार से उसकी सर्वोत्तम परिभाषा" जीवन की आलोचना है। चाहे

वह निबंध के रूप में हो, चाहे कहानी के या काव्य के उसे हमारे जीवन की व्याख्या करनी चाहिए।

(3) जयशंकर प्रसाद - काव्य या साहित्य आत्मा की अनुभूतियों का नित्य नया रहस्य खोलने में प्रयत्नहीन है।

अंग्रेजी में दी गई साहित्य परिभाषाएँ -‘ (1) मेथ्यू आर्नल्ड - मैथ्यू आर्नल्ड ने साहित्य को जीवन की व्याख्या माना है।

(2) इन्साईक्लोपीडिया ब्रिटानिका की परिभाषा - इस प्रमाणिक कोष के अनुसार ''साहित्य एक व्यापक शब्द है जो यथार्थ परिभाषा के अभाव में सर्वोत्तम विचार की उत्तमोतम लिपिबद्ध अभिव्यक्ति के लिए व्यवहृत हो सकता है।''

आज साहित्य शब्द अनेक अर्थ में व्यवहृत होता है। अंग्रेजी में 'लिट्रेचर' शब्द का जो अर्थ है, हिन्दी में वही अर्थ आज 'साहित्य' देने लगा। (साहित्य भारत के सिद्धान्त सरोजिनी मिश्रा)

भाषा और साहित्य का संबंध - भाषा और साहित्य दोनों ही महत्वपूर्ण उपादान है। इन दोनों के बीच घनिष्ठ अधिकार आधेय संबंध भी है बिना भाषा के साहित्य संभव नहीं है। भाषा साहित्य की कला सामग्री है। भाषा के अनेक सामाजिक उपयोग है। इसका एक ललित उपयोग साहित्य रचना भी है। भाषा का साहित्यगत उपयोग विशिष्ट है। अन्य जगत तो भाषा अभिव्यक्ति या प्रेषण का माध्यम होती है और साहित्य में इसका उपयोग रचना या निर्माण की सामग्री के रूप में होता है। साहित्य के रूप में पुनर्गठित भाषा आस्वाद की प्रक्रिया को जन्म देती है। आस्वाद व्यापार मानसिक है और भाषा व्यवहार बाहम इन दोनों का संयोजन साहित्य करता है। शैली भाषा और साहित्य के बीच की कड़ी है भाषा की प्रकृति में सृजनात्मक शक्ति निहित है। यह एक सांस्कृतिक विडम्बना ही मानी जाएगी कि स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व एक सामान्य हिन्दी भाषी का अपने साहित्य और उसके लेखक से भावनात्मक सम्बन्ध आज से कहीं अधिक गहरा और अर्थपूर्ण था। हिन्दी भाषा केवल विचारों का माध्यम नही, स्वाधीन चेतना का प्रतीक है प्रायः कहा जाता है कि भारत के अनेक भाषाओं में विभाजित होने से उसके साहित्य का स्वर और स्वरूप उस रूप में अखंडित समग्रता प्राप्त नहीं कर पाता, जितना हम यूरोपीय देशों के एक भाषी मोनोलिथिक साहित्य में देख पाते है, भाषा साहित्य को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पोषित करती है विभिन्न भाषाओं के भीतर एक ही सांस्कृतिक धारा प्रवहमान होती है। ''सर्वे भवन्तु सुखिन'' यह साहित्य की मूलभूत चेष्टा रही है, और यहीं हमारी संस्कृति का मूल भाव भी है। भाषा और साहित्य का सम्बन्ध एक दूसरे पर आधारित है। एक के अस्तित्व के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है यदि भाषा के बिना साहित्य अपना रंग रूप आकार धारण नहीं कर सकता तो साहित्य के अभाव में भाषा की उपादेयता एवं अस्तित्व ही व्यर्थ हो जाते हैं। यदि साहित्य को चित्र कहा जाए तो भाषा उस चित्र निर्माण का कैनवास और रंग तूलिका कहे जाएंगे। भाषा के माध्यम से साहित्य अपना रूप धारण करता है तो साहित्य भाषा को सार्थक बनाता है। कुछ लोगों को जो थोड़ा-सा साहित्य पढ़ लेते है उन्हें यह भ्रान्ति हो जाती है कि वे भाषा और साहित्य सब कुछ जान गए हैं। ज्ञान ग्रहण करने के मामले में भाषा और साहित्य दो अलग-अलग चीजें हैं। और दक्षता दोनों में वांछित है। जबकि वास्तविक स्थिति यह है कि जब तक भाषा पर किसी का अच्छा अधिकार नही वही साहित्य को

नही समझ सकता। भाषा साहित्य की अभिव्यक्ति है वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक के अभाव में दूसरे की स्थिति नगण्य होकर रह जाएगी। एक मिटेगा तो दूसरा उसके पहले समाप्त हो जाएगा और यदि एक खड़ा होगा तो दूसरा उसके पास ही दिखाई देगा। भाषा यदि शरीर के तो साहित्य उसका प्राण। दूसरी ओर भाषा रहित साहित्य शून्य की स्थिति को प्राप्त कर लेता है।। साहित्य को रूप प्रदान करने वाले भाषा के तत्व हैं - विचार भाव कल्पना शैली शब्द भण्डार का सटीक प्रयोग आदि। इनके अभाव में साहित्य अस्तित्व नही प्राप्त कर सकता, परन्तु इनकी अपनी तब तक कोई स्वतंत्र सत्ता भी नही जब तक इसमें साहित्य के कमनीय कुसुम न गूंथ दिए जाएँ। निःसन्देह साहित्य, भाषा पर आश्रित भी है और उसका आश्रयदाता भी है वास्तविकता यह है कि शब्दों की स्वतंत्र रूप से तब तक कोई सत्ता नही, जब तक वे वाक्य के ताने बाने में पिरो नहीं दिये जाते। जब वे शब्द रत्न वाक्य के गहने में गढ़ दिये जाते है। चमत्कार उत्पन्न करने की क्षमता उसमें आ जाती है। तभी वह साहित्य कहलाने लगता है। भाषा की सही समझ साहित्य की समझ में सहायक होती है। भाषा भावों व विचारों की जननी और उनकी वाहिका है यह विचारों के आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण साधन है भाषा के चार कौशल है - सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। यह सभी साहित्य को व्यापक रूप प्रदान करते हैं।4

निष्कर्ष

भाषा और साहित्य में गहरा पारस्परिक संबंध है भाषा एवं साहित्य दोनों सामाजिक है समाज के लिए दोनों का समान रूप से उपयोग और महत्व है। एक साहित्य का विद्वान अपने को भाषा का भी विद्वान माना है। कारण, किसी भी भाषा का उत्कृष्ट स्वरूप उसके साहित्य से ही बनता है। भाषा का संबंध साहित्य से है। अतः दोनों में पारस्परिक संबंध रहने के पश्चात् भी भाषा और साहित्य में अन्तः संबंध स्थापित होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 साहित्य का आत्म-सत्य, निर्मल वर्मा
2 आलोचना समय और साहित्य, रमेश दवे
3 हिन्दी कहानी का शैली विज्ञान, डॉ.बैकुंठ नाथ ठाकुर, पुनरीक्षक देवेन्द्र नाथ शर्मा
4 हिन्दी भाषा शिक्षण, डॉ.प्रकाशचन्द्र भट्ट